साम्प्रदायिक सौहार्द एवं सद्भाव

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी

प्यामे इंसानियत फोरम,
पोस्ट बाक्स नं० 93,
लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है यहां की भूमि में प्रेम, भाईचारा प्रारम्भकाल से पाया जाता है। इस से प्रेरणा पाकर विश्व के महान विचारक पयामे इन्सानियत फ़ोरम के संस्थापक हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) ने १९७४ ई० को इस कार्य का शुभारम्भ किया और देश के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण कर हिंसा, टकराव, नफरत, धर्म, जाति कौम प्रस्ती और बिरादरीवाद से रोका इन विचारों को देश के कोने कोने में फैलाने का प्रयास किया जिस से मौलाना (रह०) को काफी सफलता मिली इस सम्बन्ध में उन्होंने जगह जगह भाषण दिया उन्हीं एक भाषण का अनुवाद सलमान अली खां ओ०एस०डी०इ० गवर्नर, उत्तरांचल एवं भूतपूर्व इन्फारमेशन आफीसर उत्तर प्रदेश ने किया है।

इस पुस्तिका को दूसरी बार पयामे इन्सानियत फ़ोरम की तरफ से प्रकाशित किया जा रहा है। हम यहां उसका हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत कर रहे हैं। आशा है इस से देशवासियों के हृदय में इन्सानियत एवं राष्ट्रीय एकता, देश सेवा का पाठ जागृत होगा, अल्लाह (ईश्वर) हमें इन बातों को व्यवहार में लाने की शक्ति एवं सद्बुद्धि प्रदान करें।

15-7-2003 **पयामे इन्सानियत फ़ोरम**

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 के आदर्श व्यक्तित्व एवं महान कृतित्व से सभी परिचित हैं। वे जीवन–पर्यन्त तहरीर और तक़रीर से इस्लाम धर्म के प्रचार–प्रसार, राष्ट्र–उत्थान, देशवासियों, विशेषकर मुसलमानों में प्रेम एकता, आपसी मेल–जोल, धार्मिक सौहार्द एवं सद्भाव तथा राष्ट्रीयता की भावना सुदृढ़ करने के साथ ही राष्ट्र–निर्माण के लिए निःस्वार्थ भाव से बराबर आवाज़ उठाते रहे। हज़रत मौलाना के दिल में मुल्क और मिल्लत का इतना दर्द था कि उन्होंने मानव–प्रेम, शांति–सद्भाव और मानवता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देश के कोने–कोने में घूम फिर कर 'प्यामे इंसानियत फोरम' के अन्तगर्त 'मानवता' विषयक संगोष्ठियाँ आयोजित करने का जो सराहनीय एवं प्रेरणादायक कार्य शुरू किया, वह इतिहास के पन्नों में सदैव स्वर्णिम अक्षरों में जगमगाता रहेगा और नयी पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

हज़रत मौलाना "अली मियां" ने "मानवता का सन्देश" विषयक संगोष्ठियों के आयोजन का कार्य यद्यपि वर्ष 1954 में ही शुरू कर दिया था, किन्तु वर्ष 1974 से इसे गति प्रदान की और जन–जन में मानवता की भावना जाग्रत करने के उद्देश्य से बाक़ायदा "प्यामे–इंसानियत" के जल्से आयोजित करने का सिलसिला शुरू किया। इसी श्रृंखला में 17 मार्च, 1990 को नई दिल्ली में "प्यामे–इंसानियत" शीर्षक से एक अधिवेशन आयोजित किया गया, जो हज़रत मौलाना के

www.abulhasanalinadwi.org

सहयोगी क़ाज़ी अब्दुल हमीद इन्दौरी और पूना के अनीस चिश्ती के कठिन परिश्रम से बहुत ही सफल रहा। इस संगोष्ठी के आयोजकों के संयुक्त प्रयासों से इसे जो अभूतपूर्व सफलता मिली, उसे दृष्टि में रखकर 2 जुलाई 1990 को गन्ना संस्थान प्रेक्षागार, लखनऊ में एक बड़ा अधिवेशन आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

इस अधिवेशन में हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह0 ने बहुत ही उपयोगी भाषण दिया था, जिस पर आधारित यह पुस्तिका इस उद्देश्य को लेकर प्रकाशित की जा रही है कि आज से लगभग दस वर्ष पूर्व व्यक्त किये गये उनके विचारों से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें। सच तो यह है कि हज़रत मौलाना के यह विचार देश की वर्तमान स्थिति में पहले की अपेक्षा आज अधिक उपयोगी एवं प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

लखनऊ
15 अगस्त, 2000

सलमान अली खाँ

www.abulhasanalinadwi.org

साम्प्रदायिक सौहार्द एवं सद्भाव

अध्यक्ष जी और भाइयो,

देश एवं विदेश में आयोजित होने वाली विभिन्न गोष्ठियों में सम्मिलित होने वाले एक व्यक्ति की हैसियत से मेरा यह अनुभव रहा है कि जिस सभा में बड़ी संख्या में प्रमुख, प्रतिष्ठित एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित हों, अलग–अलग नाम लेकर उनका अभिनन्दन करना और उन्हें सम्बोधित करते हुए बात शुरू करना खतरनाक काम है। यदि एक नाम भी छूट गया तो लज्जित होना पड़ता है। इसलिए मैं सभी महानुभावों और श्रोताओं को सामूहिक रूप से सम्बोधित करते हुए कहता हूँ कि इस सभा को देखकर मेरा मन आशा से प्रफुल्लित हो उठा है। मैं स्पष्ट कहता हूँ कि जब इतने महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित महानुभाव मानवता के ह्रास की पीड़ा को महसूस करें और इसमें इतनी रूचि लें तो इस देश के बारे में निराश होने का कोई कारण नहीं। तथापि इसके बारे में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है।

हज़रात! ग़लती सबसे होती है। इंसान ही ग़लती करता है, पत्थर ग़लती नहीं करता। वृक्ष गलती नहीं करता। बीमार होना भी अस्वभाविक और अप्राकृतिक नहीं होता। कौमों, मुल्कों, हुकूमतों और समाजों का इतिहास ग़लती के दृष्टांतों से भरा हुआ है, किन्तु जो चीज़ खतरनाक है, वह यह है कि ग़लती को ग़लती माना ही न जाये। ग़लती को

www.abulhasanalinadwi.org

महसूस न किया जाये। फिर उसके बाद दूसरी बात यह है कि फिर उस ग़लती को हिम्मत करके बताया ही न जाये। अब उम्मीद बनती है और उम्मीद पैदा होती है कि हम आप सब ग़लती को ग़लती समझ रहे हैं। किसकी ग़ल्ती ? मैं किसी दल, किसी गुट का नाम नहीं लूँगा। हम किसी का नाम नहीं लेते। लेकिन कहते हैं ग़लती हुई। संसार में सर्वश्रेष्ठ मर्तबा धर्मों का है। उसके बाद संस्कृतियाँ, कल्चर, देश और समाज आते हैं। यह सब के सब इसी कारण बचे हैं कि ग़लती को ग़लती कहने वाले लोग वक़्त पर पैदा हो गये। मेरी इस बात पर भी आप ध्यान दें कि वक़्त पर पैदा होना भी आवश्यक है। समय निकल जाने के बाद आलोचना और स्वीकारोक्ति से कुछ ज़्यादा लाभ नहीं होता।

हज़रात! मेरे पास समय कम है। मुझे इसके लिए माफ़ किया जाये कि मैं इतिहास का एक विद्यार्थी हूँ। मेरा ध्यान अतीत की ओर जाता है और पीछे की ओर लौटता है। वह इतिहास के बीते हुए घटनाक्रम के दृष्यों को अपने सामने लाता है। मुझे वह दिन याद आ रहा है कि 17 नवम्बर, 1946 की तिथि है और दिल्ली में स्वर्गीय डा0 ज़ाकिर हुसैन खाँ (पूर्व राष्ट्रपति), जो उस समय जामिया मिल्लिया (नई दिल्ली) के कुलपति (शेखुल–जामिया) थे, के आमंत्रण पर भारत की राजधानी दिल्ली में, इतिहास के अपने अध्ययन के बल पर मैं कह सकता हूँ कि उस समय आयोजित समारोह में ऐसी श्रेष्ठ और चयनित विभूतियाँ डाइस पर नज़र आ रही थीं, जो मेरी जानकारी में इससे पूर्व और न इसके बाद देखने में

www.abulhasanalinadwi.org

आयीं। मेरी आँखें देख रही हैं कि सामने एक ओर पण्डित जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, राजगोपालाचार्य जी बैठे हुए हैं। दूसरी ओर मिस्टर जिनाह, नवाब लियाक़त अली खाँ और सरदार अब्दुर्रब नश्तर बैठे हुए हैं। उनके पीछे डाइस पर भारत की बड़ी प्रसिद्ध विभूतियाँ, प्रबुद्धजन, लेखक, चिंतक, साहित्यकार और बुद्धिजीवी विराजमान हैं, जिनमें अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी, सर शेख़ अब्दुल क़ादिर, सम्पादक, मासिक पत्रिका मख़ज़न, लाहौर, मुहम्मद असद साहब, बाबा–ए–उर्दू अब्दुल हक़, प्रसिद्ध शायर हफ़ीज जालन्धरी तथा मुस्लिम आलिमों और धर्माचार्यों में मौलाना क़ारी मुहम्मद तैयब साहब, प्राचार्य, दारूल उलूम देवबन्द, मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान साहब, नाज़िम, जमीयत उल्मा–ए–हिन्द और अनेक शीर्ष राजनीतिज्ञ तथा स्वाधीनता संग्राम सेनानी बैठे हुए हैं।

यह भव्य एवं प्रतिष्ठित जन–समूह सामने बैठा हुआ था और स्थिति यह थी कि दिल्ली में (साम्प्रदायिक दंगे के कारण) छुरी और चाकूबाज़ी की घटनाएं हो रही थीं। हम लोग जो बाहर से मेहमान की हैसियत से आये थे, (मैं भी भाग्यवश उनमें सम्मिलित था) हम लोग पुलिस और जन–सेवकों के संरक्षण में अपने निवास–स्थल तक पहुँचाये गये थे। स्वर्गीय डा0 ज़ाकिर हुसैन खाँ ने उस समय भव्य जन–समूह को सम्बोधित करते हुए जो कुछ कहा था, मैं समझता हूँ कि उससे बेहतर, उससे अधिक प्रभावी और साहित्यिक भाषा एवं शैली में कहना मेरे लिए कठिन है। मुझे अध्यक्ष जी अनुमति

www.abulhasanalinadwi.org

दें कि मैं उनके भाषण का एक उद्धरण (Quotation) आप हज़रात को सुना दूँ, जो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जैसे इस वर्तमान स्थित का द्योतक है। डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने कहा :

"आप सभी महानुभाव राजनैतिक आकाश के नक्षत्र हैं, लाखों नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के मन में आपके लिए प्रतिष्ठा व्याप्त है। आप की यहाँ उपस्थिति का लाभ उठाकर मैं शैक्षिक कार्य करनेवालों की ओर से बड़े ही दुःख के साथ कुछ शब्द कहना चाहता हूँ।

आज देश में आपसी नफरत की आग भड़क रही है। इसमें हमारा चमनबन्दी का कार्य दीवानापन मालूम होता है। यह शराफ़त और इंसानियत के ज़मीर को झुलसा देती है। इसमें नेक और संतुलित स्वभाव की विभूतियों के नये पुष्प कैसे पुष्पित होंगे? जानवर से भी अधिक नीच आचरण पर हम मानवीय सदाचरण को कैसे संवार सकेंगे? इसके लिए जन–सेवक कैसे पैदा कर सकेंगे? जानवरों की दुनिया में मानवता को कैसे संभाल सकेंगे? ये शब्द कुछ कठोर लगते हों, किन्तु ऐसी परिस्थितियों के लिए, जो हमारे चारों ओर फैल रही है, इससे कठोर शब्द भी बहुत नर्म होते हैं। हम जो काम के तक़ाज़ों से बच्चों का सम्मान करना सीखते हैं, उनको क्या बतायें कि हम पर क्या गुज़रती है? जब हम सुनते हैं कि पशुता के इस संकट में निर्दोष बच्चे भी सुरक्षित नहीं हैं। शायरे–हिन्दी ने कहा था कि "हर बच्चा, जो संसार में आता है, अपने साथ यह सन्देश लाता है कि ख़ुदा अभी

www.abulhasanalinadwi.org

इंसान से निराश नहीं हुआ। "लेकिन क्या हमारे देश का इंसान अपने आपसे इतना निराश हो चुका है कि इन निर्दोष कलियों को भी खिलने से पहले ही मसल देना चाहता है? खुदा के लिए सिर जोड़कर बैठिये और इस आग को बुझाइये। यह समय इस खोज–बीन का नहीं कि आग किसने लगाई? कैसे लगी? आग लगी हुई है। उसे बुझाइये। यह समस्या इस क़ौम और उस क़ौम के जीवित रहने की नहीं, मानव संस्कृति एवं मानव–जीवन और पशु–जीवन के बीच चयन की है। खुदा के लिए इस देश में सुसभ्य जीवन की बुनियादों को यूँ ध्वस्त न होने दीजिये।"(1)

हज़रात! मैं महसूस कर रहा हूँ कि जिस अंदाज़ में यह बात आज कही जा रही है, इससे अच्छे अंदाज में कहनी कठिन है। इस समय समस्या यह है कि आप इस देश को संभालिये। इस देश में शराफ़त से जीवन व्यतीत करने, इस देश के प्रतिभाशाली निवासियों को अपनी प्रतिभा दिखाने और इससे बढ़कर अपनी निष्कपटता, अपनी दयाशीलता, मानव–प्रेम और शराफ़त व सदाचरण को प्रदर्शित करने का उन्हें अवसर दीजिये। इस देश में खुदा की कृपा से सब कुछ मौजूद है। मैंने केवल भारत का ही नहीं, बल्कि विश्व इतिहास भी पढ़ा है। मैं इसकी रौशनी में कहता हूँ कि कोई ऐसी सम्पत्ति और

---

(1) **सम्बोधन**–डा0 ज़ाकिर हुसैन, रजत जयन्ती समारोह, जामिया मिल्लिया, नई दिल्ली, 17 नवम्बर, 1946। इस समारोह में भाग लेने वालों में से कुछ लोगों का कहना है कि इस सम्बोधन के समय मौलाना आज़ाद और अगली पंक्ति में बैठे हुए कुछ प्रतिष्ठित नेताओं की आंखों में आंसू तैर रहे थे।

www.abulhasanalinadwi.org

दौलत नहीं है,जो इस देश में न हो या किसी न किसी रास्ते से यहाँ न आई हो। यहां की भूमि और वातावरण ने इसको तरक्की देने, इसकी क़दर करने और इसको आगे बढ़ाने की प्रतिभा दिखाई है। आप इस देश को संभालिये और ख़ुदा की इस नेमत की क़दर कीजिए। मैं यहाँ तक कहूँगा कि इस देश को संसार का नैतिक नेतृत्व करना चाहिए। संसार की महाशक्तियों और बड़े देशों ने अपने को इस योग्य नहीं रखा कि वह संसार का नेतृत्व कर सकें, बल्कि एक सत्यनिष्ठ व्यक्ति यह देखता है कि एशिया के उन देशों में, बड़ी पश्चिमी शक्तियों के कारण ख़राबी पैदा हो रही है। यह देश किसी सदाचारी और किसी योग्य नेतृत्व को या किसी अच्छी लीडरशिप को उभरने नहीं देते। यदि ऐसा नेतृत्व वहां पैदा हो जाता है तो वे उसे अधिक समय तक बने रहने का अवसर नहीं देते और वे वहाँ की राजनीति में हस्तक्षेप करते हैं। वहाँ की आर्थिक एवं नैतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करते हैं। मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ कि आज संसार में वह सिंहासन ख़ाली है, जिस पर एक बड़ा देश बैठे और विश्व को नैतिकता और सच्ची दयाशीलता का पाठ पढ़ाए, (वह भी मात्र ख़ुदा के नाम पर लाभ उठाने और प्राणियों पर अत्याचार करने तथा स्वार्थ के लिए नहीं) वरन् ख़ुदा से सही तौर पर डरकर और ख़ुदा की मुहब्बत में (जो प्रकृति–सृष्टा और इन्सान को पैदा करने वाला है) रंग और नस्ल के मतभेद के बिना इन्सानों को सीने से लगाये और उनसे मुहब्बत करे और उनकी सेवा करे।

www.abulhasanalinadwi.org

आज यह सिंहासन ख़ाली है। रूस ने, मुझे माफ़ किया जाये, इस बारे में अपनी अकर्मण्यता सिद्ध कर दी। वह असफल हो गया। अमरीका असफल हो रहा है। ब्रिटिश असफल हो चुका है। योरोप की दूसरी बड़ी शक्तियाँ—सब असफल हो गईं। जब कोई क़ौम, कोई देश अपनी निष्कपटता और निःस्वार्थता, अपनी प्रतिभा और दक्षता, अपनी दयाशीलता और अपने मानव—प्रेम को सिद्ध कर देता है तो उसे युद्ध की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसके लिए अधिक प्रचार की आवयकता नहीं। इसके लिए तथ्य, निष्कपटता और सत्यता की आवश्यकता है। वास्तव में नैतिकता, मानव—प्रेम, स्नेह और निःस्वार्थ सेवा तथा आध्यात्मिकता इस देश की परम्परा रही है और इसने इतिहास के विभिन्न युगों में यह उपहार बाहर भी भेजा है और अब भी भेज सकता है। मैं अपने मुसलमान भाइयों से विशेषरूप से कहूँगा कि इस सम्बन्ध में उन पर बड़ी जिम्मेदारी है। क़यामत (महाप्रलय) के दिन उनसे पूछा जायेगा कि दुनिया लड़ रही थी, नैतिकता का ख़ून किया जा रहा था, सतीत्व बरबाद हो रहा था, मान—मर्यादा समाप्त हो रही थी और इन्सान का खून सबसे अधिक सस्ता हो चुका था। तुम बैठे क्या कर रहे थे? तुम्हारा कर्तव्य था कि तुम इस परिस्थिति को बदलने की कोशिश करते। तुम्हारा यह दायित्व केवल भारत ही तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे संसार में बदलाव लाने की तुम पर ज़िम्मेदारी थी। डा० इक़बाल ने इस सच्चाई को इस प्रकार वर्णित किया है:—

है हक़ीक़त जिसके दीं की एहतिसाबे—कायनात

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रात! मैं आपसे स्पष्ट कहता हूँ कि प्यामे-इंसानियत का CREDIT मैं स्वयं नहीं लेता। इसका सेहरा मेरे सिर पर बंधा हुआ नहीं है। मेरी प्रतिभा, मेरा अनुभव, मेरी व्यस्थता, मेरी अभिरूचि और मेरा स्वास्थ्य, कोई भी चीज़ इसे बरदाश्त करने योग्य नहीं थी, किन्तु मन में एक खटक थी, जिसने मुझे इस पर तैयार किया। कभी कभी ऐसा होता है कि आग लगती है और आग बुझाने वाले भी होते हैं, किन्तु उन्हें आवाज़ देने वाला कोई नहीं होता। उस समय एक बालक भी खड़े होकर आवाज़ लगाये कि आग लगी है, आग लगी है। उस समय यह नहीं देखा जाता कि किस आयु के व्यक्ति ने आवाज़ लगाई। किसी सुयोग्य व्यक्ति ने आवाज़ लगाई अथवा किसी अयोग्य और अशिक्षित व्यक्ति ने। जब आग लगी हो और गाँव या बस्ती जल रही हो तो फिर जो बोल सकता है, उसको बोलना चाहिए। जो दौड़ सकता है, उसे दौड़ना चाहिये। जो दुहाई दे सकता है, उसको दुहाई देना चाहिए। दायित्व की इसी अनुभूति ने मुझे विवश किया कि इतने बड़े देश में और इतने बड़े–बड़े लोगों की उपस्थिति में यह आवाज़ लगाऊँ। मुझे इस बात पर गर्व नहीं कि मैने यह आवाज़ लगाई और मैं यह दावा भी नहीं करता कि सबसे पहले मैंने ही आवाज़ लगाई। आवाज़ बराबर लगाई जाती रही है। यह हमारे देश का अपमान है और इसके इतिहास को अनदेखा करना है कि यह कहा जाये कि यह आवाज़ पहली बार लगाई गई है। मैं नहीं समझता कि कोई सदी ख़ाली गई हो कि यहाँ ऐसे साहसी व्यक्ति मौजूद न रहे हों,

www.abulhasanalinadwi.org

जिन्होंने आवाज़ लगाई। मैं आपके सामने स्पष्ट रूप से स्वीकार करता हूँ। मुझे यह अनुमान नहीं था कि मेरी यह कमज़ोर आवाज़ इतने बड़े लोगों और इतने पढ़े–लिखे व्यक्तियों को यहाँ एकत्र करेगी। यह इस देश की प्रतिभा और उदारता का द्योतक है। मैं अपने प्रदेश के मुख्यमंत्री की इस बात के लिए प्रंशसा करूंगा कि उन्होंने एक ऐसे समय में जब केवल राजनैतिक उद्देश्य, राजनैतिक भाषा और राजनैतिक शैली का चारों ओर बोलबाला है, उन्होंने सैद्धान्तिक एवं नैतिक आवाज़ उठाई और कहा कि "हम क़ानून को इस प्रकार ध्वस्त होते नहीं देख सकते। यदि क़ानून खेल बन गया, न्यायालय के निर्णय खेल बन गये, यदि शांति–व्यवस्था बच्चों का मज़ाक बन गई तो इस देश में न तो पढ़ा जा सकता है और न लिखा जा सकता है, न मानवता की सेवा हो सकती है और न ही इल्मो–अदब की। यह तो बड़ी चीज़ें है, घर में आदमी आराम से बैठ भी नहीं सकता।"

आज इस मस्जिद के मामले में, कल उस मंदिर के मामले में इतिहास को जगाया जा रहा है और हज़ार दो हज़ार वर्ष पूर्व क़ाफ़िला जहाँ से चला था, फिर क़ाफ़िले को वहीं से यात्रा शुरू करने पर तैयार किया जा रहा है। यदि यह काम भारत में शुरू हो गया तो समस्त निर्माण एवं रचनात्मक कार्य तथा देश के विकास के कार्य बन्द हो जायेंगे। इसलिए मैंने जैसे पहले कहा था, आज फिर कहता हूँ कि इतिहास एक सोया हुआ शेर है। इसको जगाना नहीं चाहिए। आप इसके पास से निकल जाइये। इसको सोता

www.abulhasanalinadwi.org

छोड़ दीजिये। यदि आपने इसको जगा दिया तो फिर इस ग़लती की क़ीमत चुकानी पड़ेगी। इतिहास को पिछले युग में वापस ले जाना और वहाँ से यात्रा शुरू करना ठीक नहीं है। क्योंकि जब भारत में बाहर से नस्लें आ रही थीं, संस्कृतियां और धर्म आ रहे थे तो हम तत्कालीन परिस्थितियों का उल्लेख करके आज कोई काम, जो इस देश के काम आ सकता है, नहीं कर सकते।

मैं आपके इस प्रकार ध्यान देने, सुनने और आदर व मुहब्बत से पेश आने के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ और ख़ुदा से दुआ करता हूँ और आशा करता हूँ कि साम्प्रदायिक सौहार्द तथा सह–अस्तित्व के श्रेष्ठ सिद्धांत के लिए जो क़दम उठाया गया है और कोशिशें शुरू की गयी हैं, वह फलदायक, परिणामपरक और सम्मानजनक हों"।

धन्यवाद!"

★ ★ ★
★ ★
★

www.abulhasanalinadwi.org

(15)

नफ़रत की आग को बुझाइये

हज़रत अली मियाँ का सदुपदेश

सज्जनों! यदि दिल को चीर कर या आँसुओं को बहाकर देश के पर्वतों, वृक्षों और नदियों के ज़रिये हम आपको इस देश की कराह सुनवा सकते तो अवश्य इस कराह को आप तक पहुँचाते। यदि वृक्ष और पशु बोलते तो वे आपको बताते कि इस देश की अन्तरात्मा घायल हो चुकी है। उसकी प्रतिष्ठा और ख्याति को बट्टा लगाया जा चुका है और वह पतन एवं अग्नि परीक्षा के एक बड़े खतरे में पड़ गयी है। आज सन्तों, धार्मिक लोगों, दार्शनिकों, लेखकों और आचार्यों को मैदान में आने, नफ़रत की आग बुझाने और प्रेम का दीप जलाने की आवश्यकता है। इस देश की नदियाँ, पर्वत और देश के कण कण तक आपसे अनुरोध कर रहे हैं कि आप इंसानों का रक्तपात न कीजिए, नफ़रत के बीज मत बोइये, मासूम बच्चों को अनाथ होने से और महिलाओं को विधवा होने से बचाइये। भारत को जिन विभूतियों ने स्वाधीन कराया था, उन्होंने अहिंसा, सद्व्यवहार और जनतंत्र के पौधों की सुरक्षा का दायित्व हमें सौंपा था और निर्देश दिया था कि इन पौधों को हाथ न लगाया जाय, किन्तु हम उनकी सुरक्षा में असफल रहे। इसके फलस्वरूप हिंसा और टकराव का दानव हमारे सामने मुँह खोले खड़ा है। नफ़रत और हिंसा की आग हमारी उन समस्त परम्पराओं को जला देने

www.abulhasanalinadwi.org

पर तत्पर है, जिनके लिए हम समस्त संसार में विख्यात थे और आदर एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखे जाते थे। हमारी ग़लतियों ने बाहरी देशों में हमारा सिर नीचा कर दिया और हमारी स्थिति यह हो गयी कि हम मुँह दिखाने योग्य नहीं रह गये।

नफ़रत की इस आग को बुझाइये और याद रखिये! जब यह हिंसा किसी देश या कौम में आ जाती है तो फिर दूसरे धर्म वाले ही नहीं, अपनी ही कौम और धर्म की जातियाँ और विरादरियाँ, परिवार, मुहल्ले, कमज़ोर और मोहताज इंसान और जिनसे लेशमात्र भी विरोध हो, उसका निशान बनते हैं।

(पटना (बिहार) के श्री कृष्ण प्रेक्षागार में ३० जून १९९३ को आयोजित "प्यामे–इंसानियत" कार्यक्रम में दिये गये हज़रत अली मियाँ के भाषण का अंश।)

www.abulhasanalinadwi.org